National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 199-201
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. विनोद बाबुराव मेघशाम
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग,
क्रिस्तु जयंती (डिम्ड टू बी विश्व-विद्यालय) के. नारायनपूर,
बेंगलुरु -560077

Correspondence:
डॉ. विनोद बाबुराव मेघशाम
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग,
क्रिस्तु जयंती (डिम्ड टू बी विश्व-विद्यालय) के. नारायनपूर,
बेंगलुरु -560077

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी महानायक बिरसा मुंडा

डॉ. विनोद बाबुराव मेघशाम

शोध सार:

यह लेख भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान नायक, बिरसा मुंडा के जीवन की प्रमुख घटनाओं का अवलोकन प्रस्तुत करता है। बिरसा मुंडा, जिन्हें 'धरती आबा' (पृथ्वी पिता) के नाम से भी जाना जाता है, एक आदिवासी नेता थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी और आदिवासी अधिकारों के लिए संघर्ष किया। बिरसा मुंडा को आदिवासी समुदाय में एक महान नायक के रूप में देखा जाता है। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ आदिवासी समुदायों को एकजुट करके आंदोलन चलाया। जो केवल अपनी आयु के 25 वर्ष में ही आदिवासी समाज के लिए एक प्रेरणादाई व्यक्तित्व की छाप छोड़ते हैं। जिन्होंने ब्रिटिश शासन एवं भारतीय जमींदारों के द्वारा किए गए शोषण के प्रति आवाज उठाई और अपने आदिवासी समाज को जागृत किया। इसी के साथ बिरसा मुंडा केवल आदिवासी समाज को ही जागृत न करते हुए अपनी सांस्कृतिक, प्राकृतिक एवं नैसर्गिक धरोहर को अन्य लोगों के हस्तक्षेप से बचाने का प्रयास किया। साथ ही इन्होंने ब्रिटिशों के द्वारा धर्मांतरण के षड्यंत्र को पहचान कर, उनकी नीतियों से अपने समुदाय को जागरूक कर उनके शासन व्यवस्था का कड़ा विरोध किया। यह विरोध एक विरोध न होते हुए एक जन आंदोलन का रूप धारण किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि आदिवासी समाज अपनी भौगोलिक प्रदेश की रक्षा करने के साथ ही 'जल, जंगल और जमीन' जैसे प्राकृतिक धरोहर की रक्षा के साथ ही अन्य व्यक्ति के हस्तक्षेप विरोध कर उसकी रक्षा का भाव हर एक आदिवासी समुदाय में भरने का काम बिरसा मुंडा ने किया। उनके द्वारा किए गए आंदोलन को 'उलगुलान' आंदोलन ऐलान करते है। आदिवासी समुदाय के सैकड़ो वर्षों से चला आ रहा 'जल, जंगल जमीन' की स्वच्छंद, स्वतंत्रता को रक्षित करने का काम किया। इसीलिए बिरसा मुंडा केवल एक आदिवासी संस्कृति के रक्षक ही नहीं बल्कि उनके लिए एक भगवान का रूप भी धारण करते हैं। वह अपने समाज के लिए या संपूर्ण भारत के आदिवासी समाज की संस्कृति के रक्षक ना होते हुए यह उनके लिए भगवान के रूप में देखे जाते हैं। और साथ ही ब्रिटिश शासन के विरोध किए गए आंदोलन से वे स्वतंत्रता संग्राम के पहले नायक के रूप में भी देखे जाते हैं।

बीज शब्द: जनजाति, सांस्कृतिक, भौगोलिक क्षेत्र, जननायक, मुंडा आदिवासियों का विद्रोह, जमींदारी शोषण।

मूल आलेख:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे कई महानायक हुए हैं जिन्होंने अंग्रेजों और उनके शासन का कडा विरोध किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे ही एक आदिवासी समुदाय के महानायक बिरसा मुंडा जो अपने आदिवासियों को एक सुत्र में लाकर ब्रिटिश शासन के विरोध में आंदोलन किया। साथ ही आदिवासियों में राष्ट्रीयता का महत्व समझाते हूए ब्रिटिश शासन को सबक सिखाया। इस महान क्रांतिकारी बिरसा मुंडा ने देश और अपने जनजातीय समाज के हितों के लिए संघर्ष करते हुए ब्रिटिश सत्ता के विरोध में जन आंदोलन खड़ा किया। जिससे जनजातिय समाज को जागरूक तो किया साथ ही

अंग्रेजों को भारत भूमि छोड़कर जाने के लिए मजबूर किया। झारखंड में अंग्रेजों के आने से पहले वहा के मूल निवासी का ही राज था । लेकिन अंग्रेजी शासन की शुरूवात होने के बाद झारखंड के आदिवासियों को अपनी स्वतंत्रता और स्वायत्तता असुरक्षित महसूस होने लगी । यहां के वनवासी सैकड़ो वर्षों से 'जल जंगल और जमीन' के सहारे स्वच्छंद जीवन जीते आ रहे आदिवासी समुदाय अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों को लेकर हमेशा संवेदनशील रहे है। इसलिए अपनी आजादी को बचाने के लिए संघर्ष करते रहे हैं। अंग्रेजों ने जब आदिवासियों से उनके जल, जंगल और जमीन को हडपने की कोशिश की तो उसके विरोध के साथ ही 'उलगुलान' आंदोलन का ऐलान करने वाले बिरसा मुंडा ही थे ।

ऐसे ही जनजातीय समाज के नायकों के अनेक उदाहरण है जो भारत के स्वतंत्रता के आंदोलनों में भरपूर योगदान रहा है। भारत में जनजातियों की अपनी एक विशिष्ट सांकृतिक पहचान है। यह प्राकृतिक और भौगोलिक रूप से एक निश्चित भू-प्रदेश यानी (जंगल, पहाड़, गुफाओं) जैसे स्थानों में जीवनयापन करते थे। इन्हें समाजशास्त्रीय चिंतक एवं विद्वानों ने इनको वंचित वर्ग, समूह या समुदाय जैसे शब्दों से सम्बोधित करते हैं । जनजाति को समझाने के लिए अनेक विद्वानों ने उसे अलग अलग रूप से परिभाषित करने का प्रयास किया । जैसे 'राल्फ लिण्टन' जनजाति के संदर्भ में वे कहते है कि - "सरलतम रूप में जनजाति एक ऐसा मानव समूह है, जो एक विशेष भू-भाग पर रहता है, तथा जिसमें सांस्कृतिक समानता, निरन्तर सम्पर्क तथा कुछ विशेष हितों के कारण सामुदायिक एकता की भावना होती है एवं जिसका जीवन रीति रिवाज और व्यवहार के तौर तरीके आदिम अर्थात् आदिकालीन विशेषताओं से युक्त रहते हैं।"[1] इनकी परिभाषा में भू-भाग, सांस्कृतिक समानता, रीति रिवाज और आदिकालिन विशेषताओं को प्रमुखता दिया है । इसी के साथ 'श्यामाचरण दुबे' कहते है कि - "वास्तव में जनजाति व्यक्तियों का एक वह समूह है, जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में आवास या विचरण करता है । और जो किसी आदि पूर्वज को ही अपना उद्‌गम मानता हो तथा जिसकी एक सामान्य संस्कृति होती है, और जो आज भी आधुनिक सभ्यता के प्रभावों से परे है ।"[2] जनजाति के संदर्भ में रवीन्द्रनाथ मुखर्जी लिखते है कि - "एक जनजाति वह क्षेत्रीय समूह है, जो भू-भाग, भाषा, सामाजिक नियम और आर्थिक कार्य आदि विषयों में एक समानता के सूत्र में बंधा होता है ।"[3] इन विद्वानों के विचारों का आवलोकन करने पर यह कह सकते है कि एक सुनिश्चित प्रदेश में अपनी विशेष रीति-नीति, आचरण, भाषा और प्रकृति के सानिध्य में जो जीवनयापन करते है उसे ही जनजाति कहते हैं ।

इन्हीं जनजाति के जननायक बिरसा को आधुनिक भारत के संपूर्ण आदिवासी समाज ने अपना आदर्श एवं प्रेरणा की स्फूर्ति के रूप में स्वीकार किया है । बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश शासन व्यवस्था, भारतीय जमीदारों के द्वारा किया जानेवाले अन्याय, शोषण का विरोध करके उसके खिलाफ स्वायत्तता और स्वशासन की मांग की । इनके द्वारा किए गये इस क्रांतिकारी आंदोलन के परिणाम स्वरूप ब्रिटिश शासन बाद में एख छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट (सीएनटी एक्ट भी कहा जाता है, झारखंड की आदिवासी भूमि और किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए बनाया गया एक महत्वपूर्ण भूमि कानून है।) को सन1908 में इस क्षेत्र में लागू किया गया है, जो आज तक कायम है । यह कानुन आदिवासीयों के जमीन को गैर आदिवासी में हस्तांतरित करने पर प्रतिबंध लगाता है और साथ ही आदिवासियों के मूल अधिकारों की रक्षा करने में प्रतिबद्ध है । बिरसा मुंडा को आदिवासियों के जननायक एवं भगवान के रूप देखा गया है। इनका संघर्ष सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक और अपनी धरोहर रक्षा करने की प्रेरणा से भरा हुआ था । उनके जन्म एवं इनके द्वारा किए गये आंदोलन के संबंध में शैलेन्द्र सेंगर लिखते है कि - "मुंडा आदिवासियों का विद्रोह 1899-1900 ई. के बीच हुआ । बिरसा मुंडा ने इसका नेतृत्व किया उसका जन्म 1872 ई में चालकद गाँव में हुआ था उसकी शिक्षा चाईबासा में हुई थी ।"[4] शिक्षा के प्रति इनकी अच्छी रूचि थी । इन्हे अंग्रेजी भाषा पर अच्छी पकड थी। वे जर्मन धर्म प्रचारकों से प्रभावित होकर उन्होंने ईसाई धर्म को भी स्वीकार किया था ।

बिरसा मुंडा के जन्म तिथि और स्थान को लेकर अनेक विद्वान अलग-अलग मत रखा है । लेकिन इनका जन्म रांची जिले के उलीहातु नामक गाँव में मुंडा जनाजति में 15 नवंबर 1875 में हुआ था। इसी संदर्भ में कुमार सुरेश सिंह बिरसा मुंडा और उनका अंदोलन में इस प्रकार लिखते है कि "उनका जन्म स्थान उलिहातु बताया गया है तो कुछ में चलकद ।"[5] बिरसा मुंडा का जन्म स्थान उलिहातु था ।

'मुंडा जनाजति' झारखण्ड के आदिवासी समुदायों में से एक है । बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा था वे एक किसान थे । लेकिन उनके पिता बिरसा को पढ़ाने के लिए इसाई पाठशाला में भेज दिया था । वहाँ पढ़ते समय बिरसा ब्रिटिश शासन और ईसाई धर्म किस तरह से भारत और आदिवासी लोगों पर अन्याय और अत्याचार करती है इसको अच्छी तरह से समझा था । उसी समय से उन्होंने उनके विरोध में संघर्ष करने का मन बना लिया था । दूसरी तरफ छोटा नागपुर अंग्रेजों के शासन और जमींदारों के शोषण से ग्रस्त था। वह प्रदेश इनके गुलामी में जकडा हुआ था । इसे देखकर यहाँ अपने आदिवासी साथियों से मिलकर ब्रिटिश शासन एवं अधिकार के विरोध करते हुए आदिवासी संस्कृति और धरोहर को बचाने के लिए आवाज उठायी इसके साथ ही आदिवासियों के मानवीय अधिकार और महिला सशक्तिकरण, गरीबी, अंधविश्वास एवं आदिवासियों के शोषण का भी विरोध किया ।

बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों को 'अपने देश वापस जाओ' का नारा दिया। और सन 1899-1900 में बिरसा मुंडा ने 'उलगुलान' (महाविद्रोह) का नेतृत्व किया । यह विद्रोह ब्रिटिश सरकार और ज़मींदारों द्वारा आदिवासियों की ज़मीन छीनने और शोषण के खिलाफ था। उन्होंने जंगलों और पहाड़ियों में आदिवासियों को संगठित कर गुरिल्ला युद्ध शैली में लड़ाई लड़ी। यह आंदोलन इतना शक्तिशाली था कि अंग्रेज सरकार को उनके आंदोलन को दबाने के लिए सेना भेजनी पड़ी । बिरसा ने 'उलगुलान' का ऐसा प्रतिनिधित्व किया जैसे स्वतंत्रता के आंदोलन में अन्य नेताओं ने किया । वे अंग्रेजों के कुनीतियों एवं षड़यंत्रों के खिलाफ आदिवासियों को एकत्रित कर

उनके शासन व्यवस्था के प्रति विद्रोह का सूत्र तैयार कर लिया और उन्हें अपनी आवाज उठाकर देश, संस्कृति और धर्म को बचाने को कहा । उन्होंने सामाजिक संरचना को नया जीवन दिया था। इसलिए बिरसा मुंडा को केवल सीमित प्रदेश में ही नहीं बल्कि पुरे भारत राष्ट्र के नायक के रूप में पहचान मिला । साथ ही जनजातीय समुदाय भगवान बिरसा मुंडा को अपना 'भगवान' के रूप स्विकारा किया ।

इनकी प्रारंभीक शिक्षा 'सलगा' में स्थित जयपाल नाग द्वारा चलाए जा रहे स्कूल में हुई थी । बिरसा शिक्षा एवं पढाई में बहुत ही तेज थे जिसके कारण जयपाल नाग ने उन्हें 'जर्मन लुथरेन मिशन स्कूल चाई बासा' में भर्ती कराने को कहा । उसी समय उनका ईसाई धर्म में धर्म परिवर्तन हुआ और उन्हें 'बिरसा डेव्हिड' नाम भी दिया गया था। उस प्रदेश में 'मुंडा' ही नही अन्य जनजाति पहले से ही रहते थे। इनके प्रादेशिक क्षेत्र के संदर्भ में माजिद मिया कहते है कि - "भारतीय भूखंड प्रागैतिहासिक काल से ही कोल, भील, मुंडा आदि जनजातियों का निवास स्थान रहा है । एक समय ऐसा था पुरा छोटा नागपुर क्षेत्र घने वनों से आच्छादित था ।"[6] इस कथन से यह कह सकते है कि छोटा नागपूर इनका मूल निवास था । इसी प्रदेश में मुंडा जनजाति के साथ और भी जनजाति के समुदाय निवास करते थे।

बिरसा मुडां ने अपने समाज के प्रति होते अन्याय एवं शोषण के खिलाप आंदोलन किया इसका परिणाम यह हुआ की वहाँ के कम उम्र के युवाओं में मानवीय चेतना पैदा करते हुए इस प्रेरणादायी, क्रांती की भावना के बीज हर एक आदिवासी के मन में बोने के काम किया। इसी कारण उन्हें जो महानायक का नाम मिला । इसी महानायक के बारे में एक विद्वान लिखते है कि - "भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा एक ऐसे नायक थे जिन्होंने भारत के झारखंड में अपने क्रांतिकारी चिंतन से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नवीन सामाजिक और राजनितिक युग का सुत्रपात किया।"[7] बिरसा मुंडा अंग्रेजी शासन को चुनौती देते हुए आदिवासियों के हितों की रक्षा करने की आवाज उठायी और इसके साथ ही आदिवासी समाज को जागृत करने की कार्य को अपनी पहली प्राथमिकता समझी थी।

बिरसा मुंडा के उलगुलान के बारे में आदिवासी समुदाय के एक महान विद्वान और कवि हरिराम मीणा ने अपनी कविता 'बिरसा मुंडा की याद में' में लिखते है कि **-** " मैं केवल देह नहीं, मैं जंगल का पुश्तैनी दावेदार हूँ, पुश्ते और उनके दावे मरते नहीं, मैं भी मर नहीं सकता, मुझे कोई भी जंगलों से बेदखल नहीं कर सकता उलगुलान ! उलगुलान !!"[9] इन पंक्तियों के माध्यम पता चलता है कि बिरसा मुंडा का आंदोलन 'उलगुलान' इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भी जारी है। इसलिए आज भी भारत के अनेक आदिवासी समुदाय बिरसा को जनजाति का महानायक कहते है। इनके द्वारा किया गया ब्रिटिश शासन का विरोध और जनजाति के हितो की रक्षा एक सहास ओर शौर्यपूर्ण कार्य था । इस तरह करने वाले बिरसा मुंडा राष्ट्र के पहले आदिवासी नेता थे जो भारत के आदिवासीयों ने उन्हे अपना आदर्श और प्रेरणा का प्रतीक माना है । इसके साथ-साथ भगवान बिरसा मुंडा ने आदिवासी समुदाय में चेतना ही नही बल्की देशभक्ति, अन्याय अत्याचार का विरोध एवं अपने सांस्कृतिक हितो की रक्षा के लढने की भावना जागृत करने का कार्य किया ।

उपसंहार: बिरसा मुंडा के द्वारा किया गया उनका आंदोलन एवं संघर्ष आज के युवा समाज और हमारे जीवन को भी प्रेरणादायक है । बिरसा मुंडा का संघर्ष जीवन एवं ब्रिटिश शासन के द्वारा किए गए अन्याय और शोषण के प्रति जागृत भाव मानव समाज के लिए प्रेरणादायी शक्ति है । बिरसा मुंडा का जनआंदोलन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का बिगुल माना जाता है । ब्रिटिश शासन के विरोध में बिरसा का संघर्ष एवं बलिदान का फलस्वरूप ही आज भारतीय समाज और जनजाति की जल जंगल और जमीन सुरक्षीत मानी जाती है । इनके आंदोलन ने लोगों को संघटित होने में प्रेरित किया और जमीदारों, ठेकेदारों से होनेवाली ठग और शोषण से रक्षा किया। बिरसा मुंडा का आंदोलन न केवल राजनीतिक था, बल्कि सामाजिक और धार्मिक भी था। उन्होंने आदिवासियों को अंधविश्वासों और कुरीतियों से दूर रहने और अपनी संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए प्रेरित किया । इसी कारण बिरसा मुंडा केवल आदिवासी के जननायक न होते हुए भी एक वीर स्वतंत्र सेनानी माना जाता है । बिरसा का ब्रिटिश शासन के विरोध में किया गया आंदोलन केवल आदिवासी समुदाय और बिरसा की विचारधारा पर चलने वाले लोगों के लिए ही नही बल्कि हर एक देशवासी जो अपनी मात्र भूमि से प्रेम करनेवाले लोगों के लिए प्रेरणादायी है ।

संदर्भ ग्रंथ सूचि:

1. कुमार ध्रुव डॉ. दीक्षित, समाजशास्त्र, अनुसूचित जनजाति, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, इंदौर *2014.* प्र सं 02
2. दुबे, श्यामचरण, आदिवासी भारत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. *10 -11*
3. दुबे श्यामचरण, आदिवासी भारत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ संख्या - *3*
4. शैलेन्द्र सेंगर, आधुनिक भारत का इतिहास, ॲटलांटिक पब्लिकेशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, *2005* पृ. सं. *168*
5. कुमार सुरेश सिंह, बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण *2003* पृ. सं. *56*
6. माजिद मिया, जंगल के दावेदार आदिवासी संघर्ष, दलित आदिवासी विशेषांक, अपनी माटी, ई पत्रिका सितंबर-नवंबर 2015
7. अजहर हाश्मी – बिरसा मुंडा, आदिवासियों का महानायक, वेब दुनिया कॉम, 5 जनवरी 2019, पृ. सं. 06
8. गोपी कृष्ण कुंवर बिरसा मुंडा, प्रभात प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण 2011
9. राजन कुमार-उलगुलान जारी है, जंगलपर दावेदारी का संघर्ष, फारवर्ड प्रेस कॉम, 15 नवंबर 2017
   बिरसा मुंडा की 143 वी जयंती पर प्रकाशित लेख।